JETIR.ORG ISSN: 2349-5162 | ESTD Year : 2014 | Monthly Issue
JOURNAL OF EMERGING TECHNOLOGIES AND INNOVATIVE RESEARCH (JETIR)
An International Scholarly Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

तुलसी का समन्वयवाद

Author - Niharika Kunwar, Ph.D Scholar Shri JJT University Jhunjhunu, Rajasthan

हिंदू धर्म को एक नई दिशा नया स्वरूप प्रदान करने का श्री गोस्वामी तुलसीदास को जाता है। गोस्वामी की मर्यादा पुरुषोत्तम राम के अनन्य भक्त थे। जिन्होंने हिंदू धर्म का पतन होने से बचाया तथा भारतीय संस्कृति के परिचायक के रूप में हिंदू धर्म ग्रंथ रामचरितमानस की रचना की। गोस्वामी जी ने कभी किसी जाति अथवा पंथ की आलोचना नहीं की -
" जिन्ह निज पंथ कलपि करि प्रकट किये बहु पंथ"

तुलसीदास ने समाज धर्म व्यवहार भावना आदि में व्याप्त अनेक कुरीतियों को दूर कर आपस में समन्वय स्थापित करने का एक अनूठा प्रयास किया जिनमें वह सफल हुए।

समन्वयवाद के कारण ही गोस्वामी तुलसीदास साहित्य जगत के लोकनायक सिद्ध हुए। हजारी प्रसाद द्विवेदी ने तुलसीदास को लोकनायक घोषित करते हुए कहा है कि लोकनायक वही हो सकता है जिसमें समन्वय की विराट चेष्टा हो अर्थात लोकनायक का श्रेष्ठ गुण समन्वय ही होता है।
समन्वयवाद को भारतीय संस्कृति की विशेषता माना जाता है। गोस्वामी जी का जन्म भारत में ऐसे समय में हुआ जब समाज में धार्मिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनीतिक सभी क्षेत्रों में विसंगतियां व्याप्त थी। रूढ़िवादिता जाती पाती, अंधविश्वास, बाह्य-आडंबरों ने समाज को अपनी बेड़ियों में जकड़ रखा था। गोस्वामी जी ने अपनी लेखनी के माध्यम से समाज में व्याप्त कुरीतियों को गिराने का प्रयास किया। उन्होंने भारतीय आदर्शों के द्वारा लोगों में भाईचारे की भावना को प्रेरित किया। एक सभ्य समाज की स्थापना करने का प्रयत्न किया। गोस्वामी कृत रामचरितमानस हिंदी साहित्य ही नहीं अपितु विश्व जगत का सर्वश्रेष्ठ महाकाव्य है जिसमें तुलसी के समन्वय की विराट चेष्टा के पूर्ण व अनूठे दर्शन प्राप्त हुए।

साहित्य जगत में समन्वयवाद की प्रवृत्तियों में जितना उत्कर्ष गोस्वामी तुलसीदास द्वारा हुआ उतना अन्यत्र किसी कवि द्वारा नहीं। तुलसीदास ने अपनी लेखनी के माध्यम से भारतीय संस्कृति के मूल तत्व, मान्यताओं, आचार विचार, नीति सिद्धांत, भक्ति भावना को जन-जन तक पहुंचाने व उन्हें चिरकाल तक अजर अमर बनाए रखने का पूर्ण प्रयास किया। गोस्वामी जी ने भारतीय संस्कृति को विकसित किया। लोकमंगल की भावना को गोस्वामी जी अपनी काव्य रचनाओं का मुख्य उद्देश्य माना है। उन्होंने समाज में नैतिक मूल्यों की स्थापना पर बल दिया। गोस्वामी जी ने अनेक विसंगतियों को समन्वयवाद द्वारा दूर करने का एक सफल प्रयास किया जिसके कारण उन्हें लोकनायक के साथ-साथ समाज सुधारक की उपाधि भी प्राप्त हुई।

गोस्वामी तुलसीदास के समन्वयवाद के प्रमुख बिंदु

1. **शैव एवं वैष्णव में समन्वय -**

हिंदू धर्म में ब्रह्मा को सृष्टि का उत्पादक, विष्णु को सृष्टि का पालक तथा शिव को सृष्टि का संघारक कहा जाता है। इसी कारण हिंदू धर्म में ब्रह्मा, विष्णु, महेश को सर्वश्रेष्ठ स्थान पर आते हैं। तुलसीदास के युग में शिव तथा विष्णु को अपना अपना आराध्य इष्ट मानकर समाज शैव और वैष्णव दो वर्गों में विभाजित हो गया। दोनों वर्गों में मतभेद बढ़ते जा रहे थे तथा तुलसी ने मतों में विरोध को दूर कर समन्वय स्थापित किया। तुलसीदास जी ने रामचरितमानस में अनेक स्थान पर शिव और राम के संबंध को स्पष्ट करते हुए लिखा है -

" संकर प्रिय मम द्रोही, सिव द्रोही मम दास।
ते नर करहिं कलप भरि घोर नरक मुँह वास।। "

एक अन्य स्थान पर राम तथा शिव की स्तुति को स्पष्ट करते हुए गोस्वामी जी ने लिखा है -

" तुम्ह समरूप ब्रम्ह अविनासी। सदा एक रस सहज उदासी।।
अकल अगुन अज अनूध अनामय। अजित अमोघसक्ति करुनामय।। "
इस प्रकार अद्‌भुत चौपाई द्वारा गोस्वामी जी ने शिव को राम के उपासक के रूप में चित्रित किया तथा राम को शिव के अनन्य भक्त के रूप में दर्शाया है।

2. **सगुण एवं निर्गुण में समन्वय -**

तुलसीदास के पूर्व से ही समाज में भक्ति के दो रूपों सगुण व निर्गुण भक्ति को लेकर अनेक मतभेद व्याप्त थे। सूरदास ने सगुन को निर्गुण की अपेक्षा अधिक श्रेष्ठ कर बताया तथा निर्गुण का खंडन किया।

" सगुनहिं अगुनहिं नाहिं कछु भेदा।
बारि बीचि जिमि गावाहिं वेदा।
अमूल अरूप अलख अज कोई।
भगत प्रेम बस सगुन सो होई।। "

इस प्रकार गोस्वामी जी ने सगुण और निर्गुण के मध्य समन्वय का सफल प्रयास किया है।

3. **नर एवं नारायण में समन्वय -**

गोस्वामी जी ने एक और मर्यादा पुरुषोत्तम राम को दशरथ पुत्र के रूप में चित्रित करके नर रूप में दर्शाया है तथा दूसरी ओर श्री राम को परब्रम्ह की जीवित प्रतिमा के रूप में भी दर्शाया गया है।

इस प्रकार गोस्वामी जी ने नर एवं नारायण में सुंदर समन्वय स्थापित करते हुए लिखा है-

" नेहि इमि गावहिं वेद बुध, जाहिं धारहिं मुनि ध्यान।
सोई दशरथ सुत भगत हित, कोसलपति भगवान। "

4. **ज्ञान एवं भक्ति में समन्वय-**

सगुण एवं निर्गुण की ही भांति तुलसी के युग में ज्ञान एवं भक्ति में भी मतभेद व्याप्त थे। ज्ञानी लोग भक्तों को हीन व निःसार समझकर उनकी अवहेलना करते थे। तुलसीदास ने इस बीच सामंजस्य स्थापित करने का प्रयास किया।

" कहहिं संत सब वेद पुराना, नहिं कछु दुर्लभ ज्ञान सामना। "

अर्थात ज्ञान की विशेषता को स्पष्ट किया गया है। भक्ति और ज्ञान में किसी प्रकार का कोई भेद नहीं होता है। भक्ति तथा ज्ञान दोनों द्वारा संसार में उत्पन्न हुई प्रत्येक विपत्ति पर विजय प्राप्त की जा सकती है -

" भगतहिं ग्यानहिं नहिं कछु भेदा। उभय हरहिं भव संभव खेदा। "

5. **राजा एवं प्रजा में समन्वय -**

गोस्वामी जी ने महाकाव्य रामचरितमानस में राजा तथा प्रजा के दायित्वों को स्पष्ट करते हुए दोनों के मध्य अद्वितीय समन्वय स्थापित करते हुए लिखा है -

" मुखिया मुख सो चाहिए खान-पान को एक।
पालई पोषइ सकल अंग, तुलसी सहित विवेक।। "

6. **साहित्यिक क्षेत्र में समन्वय -**

गोस्वामी जी को साहित्य जगत के विख्यात कवि एवं परम राम भक्त, व एक श्रेष्ठ रचनाकार के रूप में जाना चाहता है। साहित्यिक क्षेत्र में गोस्वामी जी का समन्वय अदभुत्व प्रसिद्ध हुआ है। गोस्वामी जी ने अवधि व ब्रज भाषा का अपनी रचनाओं में सुंदर समन्वय किया है। सभी प्रकार की नवीन शैलियों को गोस्वामी जी ने अपने काव्य में अपनाया है। ब्रज भाषा का सुंदर रूप तुलसीदास कृत कवितावली में देखने को मिलता है -

" दूब दधि रोचनु कनक धार भरि भरि
आरति संवारि बर नारि चलीं गावतीं।

लीन्हें जयमाल करकंज सौहैं जनकीके

पहिराहो राघोजूको सखियाँ सिखावतीं।। ”

7. **शील एवं शक्ति में समन्वय -**

गोस्वामी जी ने श्री राम के व्यक्तित्व में शील एवं शक्ति दोनों का सुंदर रूप से प्रस्तुतीकरण किया है।

शील एवं शक्ति के अनुपम समन्वय द्वारा ही राम को मर्यादवादी लोकनायक के रूप में चित्रित किया गया है। शील तथा शक्ति का सुंदर समन्वय रामचरितमानस मानस के साथ अन्य ग्रंथों में भी देखने को मिलता है। रामचरितमानस में रामवनगमन के समय गोस्वामी जी ने शील का अद्भुत परिचय देते हुए लिखा है -

” सुनि सीतापति सील सुभाउ।

मोद न मन, तन पुलक, नयन जल सो नर खेहर खाउ।। ”

निष्कर्ष -

तुलसीदास जी के विभिन्न क्षेत्रों में समन्वय का विवेचन करने के पश्चात इस निष्कर्ष पर पहुंचते हैं कि गोस्वामी जी द्वारा भारतीय संस्कृति के तत्वों व मूल्यों को एकता के रूप में स्थापित किया गया है। गोस्वामी जी का संपूर्ण काव्य ही समन्वय का एक अद्वितीय उदाहरण है।

आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी के शब्दों में -
उनका सारा काव्य समन्वय की विराट चेष्टा है। लोक और शास्त्र का समन्वय, गृहस्थ और वैराग्य का समन्वय, भक्ति और ज्ञान का समन्वय, भाषा और संस्कृति का समन्वय, निर्गुण और सगुण का समन्वय, कला और तत्व ज्ञान का समन्वय, नर और नारायण का समन्वय आदि ….रामचरितमानस प्रारंभ से लेकर अंत तक समन्वय का काव्य है।

संदर्भग्रंथ सूची

1. **रामचरितमानस - गोस्वामी तुलसीदास**
2. **कवितावली - गोस्वामी तुलसीदास**
3. **प्राचीन एवं मध्यकालीन काव्य - हरीश पब्लिकेशन**
4. **हिंदी साहित्य का इतिहास - हरीश पब्लिकेशन**